SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

कालिदासकृत महाकाव्यों में नारी चेतना

श्रीमती सत्यवती चौरसिया

शोधार्थी (संस्कृत)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥[1]

इस श्लोक में शिव को संपूर्ण जगत का पिता और पार्वती को माता कहा गया है। रघुवंश महाकाव्य में उपर्युक्त पंक्तियां समाज में स्त्री व पुरुष की समानता का परिचायक है भारतीय संस्कृति अर्धनारीश्वर की परंपरा से उत्प्रोत है, अर्थात, महाकवि कालिदास का स्त्री चित्रण केवल काव्यात्मक कल्पना नहीं, बल्कि एक स्थाई सांस्कृतिक आदर्श है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। नारी के अनेक रूप माने जाते हैं, वह माँ, भगिनी, सुता एवं अर्धांगिनी है। वह चाहे किसी भी रूप में हो, किंतु अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन में कदापि पीछे नहीं होती है। नारी समाज के मूल स्तंभ का अर्ध भाग है। महाकवि कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियों की स्थिति अतुलनीय है।

अतः कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियों को एक आदर्श नारी, पतिव्रता बुद्धिमती, सशक्त और समाज को दिशा देने वाली शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। रघुवंशम महाकाव्य एवं कुमारसंभवम् में स्त्रियों की सुंदरता, वीरता, त्याग, तपस्या एवं शीलता का अद्भुत वर्णन कवि कालिदास ने किया है। कालिदास की रचनाएं वास्तव में नारी सौंदर्य का चित्रण ही नहीं करती बल्कि उसमें नारी चेतना अर्थात नारी की आत्मबोध, आत्मनिर्णय, मानसिक बल, सामाजिक सहभागिता और गरिमा का गहन चित्रण भी करती हैं। रघुवंशम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में राजा दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा के उत्तम चरित्र का वर्णन किया गया है, एवं विदर्भ राज की बहन इंदुमती के सौंदर्य की तुलना दीपक की शिखा से की गई है।

बीज शब्द

कालिदास, महाकाव्य, रघुवंशम्, नारी।

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास की रचनाओं में नारियों की अलग-अलग स्थितियों का अतुलनीय वर्णन देखने को मिलता है "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वही देवताओं का वास होता है। नारियों का सम्मान महाकवि कालिदास के प्रत्येक महाकाव्य या रचनाओं में परिपूर्ण है। कालिदास के काव्य में स्त्री के सौंदर्य के साथ-साथ स्त्री चेतना की ओर विशेष दृष्टि डाली जा सकती है। आज महिला सशक्त है ,वह देवी स्वरूप है, किंतु कहीं ना कहीं उसका शोषण भी होता है, कहने का तात्पर्य यह है कि भले ही हमारी संस्कृति में प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा बहुत ही उत्तम रही हो तथापि उनके शोषण में भी कोई कमी नहीं थी। अतः कालिदास के महाकाव्य में स्त्री चेतना पर विशेष बल दिया गया है।

महाकवि कालिदास ने शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को अग्रणी माना है, स्त्री को आदर्श पत्नी एवं विदुषी बनाने के लिए स्त्री शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। जैसी प्रतिज्ञा यौगंधरायण में, वासवदत्ता का वीणा वादन की शिक्षा ग्रहण करने का उल्लेख मिलता है, जिससे हम यह प्रतीत कर सकते हैं, कि कालिदास की रचनाओं में शिक्षा के क्षेत्र में नारी को स्वतंत्र माना गया है।[2]

महाकवि कालिदास के अनुसार स्त्रियों को शिक्षा के साथ-साथ ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी ।जैसे -'मालविकाग्निमित्रम् 'में, मालविका को नृत्य विषारदा कहा गया है -

"भो वयसतु न केवल रूपे शिल्पे-

भो वयस्यु न केवल रूपे शिल्पे अप्यद्वितीया मालविका"।।

वसंत सेना को विभिन्न कलाओं में दक्ष बताया गया है।

इस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है कालिदास ने अपनी साहित्य में पुरुष पात्रों की अपेक्षा स्त्री पात्रों को अधिक उत्कर्ष प्रदान किया है, उन्होंने स्त्री पात्रों को नि

अपराध होते हुए भी कष्ट सहन करने वाला बताया है! इसी में उनके चरित्र का उत्कर्ष भी है! कालिदास की दृष्टि में नारी केवल उपभोग की वस्तु नहीं है! वह ग्रहणी है, सचिव है, सखी है और समस्त ललित कलाओं में निष्णात गृहस्वामिनी है। महाकवि कालिदास की उपमा अद्‌वितीय है, विशेषकर रघुवंशम महाकाव्य में तो उनकी उपमाएं इतनी अनुपम हैं कि वे 'दीपशिखा कालिदास 'की उपाधि से विभूषित हुए हैं। रघुवंशम् के छठवें स्वर्ग में इंदुमती स्वयंवर के समय इंदुमती की संचारिणी दीपशिखा सी उपमा देने के कारण ही वे 'दीपशिखा कालिदास' कहलाए। संस्कृत साहित्य में उनकी इस उपमा को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है-

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ,

यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।

नरेंद्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे,

विर्वणभावं स स भूमिपाल:।।[3]

अर्थात इस श्लोक में इंदुमती के विशेष सौंदर्य की तुलना एक दीपक की लौ से की गई है, जिसमें यह कहा गया है कि दीपक जिस प्रकार रात्रि में ले जाई गई दीपशिखा से राजमार्ग के भवन को आलोकित करती है, उसी प्रकार इंदुमती स्वयंवर के लिए जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है, उसकी सुंदरता मानो ऐसी शिखा का रूप लिए है, कि वह जिस राजा की समक्ष पहुंचती है वह आशावान होता है और उसका चेहरा खिल जाता है, परंतु जैसे ही दीप धारणी आगे निकल जाती है उसका चेहरा मालिन हो जाता है! अर्थात वह निराश हो जाता है उसे अंधकार के समान निराशा आव्रत कर लेती है! इस प्रकार इस महाकाव्य में महाकवि कालिदास ने स्त्री सौंदर्य की उपमा एक दीपक की शिखा से की है जिसमें सजीवता प्रकट होती है, जो अन्य कवियों से विशिष्ट मानी जाती है, अर्थात महाकवि कालिदास द्‌वारा रचित काव्य में जो सजीविता दिखाई पड़ती है वह अन्यत्र काव्य में नहीं!

कालिदास कृत रघुवंशम में आठवें सर्ग में दशरथ की उत्पत्ति, इंदुमती की मृत्यु और अज के विलाप तथा शरीर त्याग का वर्णन हुआ है। नवे से लेकर 15 में सर्ग तक राम कथा वर्णित है। राम कथा में समस्त रानियां कौशल्या ,सुमित्रा एवं कैकई के महत्व ,स्नेह ,त्याग

,प्रेम व करुणा की विशिष्टता का उद्‌बोधन किया गया है! शिक्षा प्राप्ति के लिए श्री राम सहित तीनों भाइयों का गुरु वशिष्ट के आश्रम में जाने से सभी माता का त्याग भाव बहुत ही सराहनीय है, अर्थात स्त्रियों में यदि ममत्व, स्नेह व प्रेम की भावना होती है, तो दूसरी और उनमें त्याग, साहस और बलिदान की भावना भी निहित होती है! विद्‌या प्राप्ति के उपरांत पुनः राक्षस जाति के विनाश के लिए मुनि विश्वामित्र के साथ अपने राजकुमार श्री राम और लक्ष्मण वन गमन के लिए माताओं का समर्पण अतुलनीय है। श्री राम सहित समस्त भाइयों के प्रणय उत्सव के उपरांत माता सुनैना के रुदन स्वर एवं चारों पुत्री की विदाई से करुण रस में उत्प्रोत समस्त जनों में नेत्र अश्रु से मग्न पुत्रीयों का पिता जनक वह माता सुनैना सहित चारों राजकुमारी की सखियां सुशोभित होती हैं। इस महाकाव्य में स्त्रियों के समस्त पहलुओं का साक्षात्कार किया गया है! प्राचीन काल से ही स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी जैसे कि कालिदास की पत्नी विद्‌युतमा विदुषी पंडित थी यह प्रसिद्ध ही है। वैदिक परंपरा में स्त्री शिक्षा पुरुष की शिक्षा की तरह अनिवार्य थी। यह सत्य है कि नारी सशक्तिकरण की आधारशिला शिक्षा को ही माना जाता है। इस प्रकार नारियों को अनेक प्रकार से पुकारा जाता है - जैसे शिक्षित नारी, शिक्षित भगिनी, शिक्षित माता, शिक्षित पत्नी आदि बनकर ही भारतीय नारियों ने विश्व कल्याण की कल्पना की है! धार्मिक ग में हम देख सकते हैं की स्त्रियों को कितना सम्मान दिया जाता था तभी तो श्री राम के साथ सीता, कृष्ण के साथ राधा, शिव के साथ पार्वती आदि का गुणगान किया जाता है! स्त्री के बगैर पुरुष अधूरा माना जाता है, कालिदास के महाकाव्य जैसे रघुवंशम एवं कुमारसंभवम् में नारी पात्रों की भावनात्मक गहराई सौंदर्य, मर्यादा और सामाजिक भूमिका को चित्रित किया जाता है। इन पत्रों का मूल्यांकन यदि वर्तमान में समाज की दृष्टिकोण से किया जाए तब उनके महत्वपूर्ण पहलुओं को दृष्टिगत किया जा सकता है।

कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियां न केवल सौंदर्य एवं भावनात्मक रूप से परिपक्व हैं, बल्कि अपने निर्णयों, धैर्य और विवेक से नारी स्वाभिमान का प्रतीक भी बनती है। जैसे कुमारसंभवम् में माता पार्वती का शिव को प्राप्त करने हेतु कठोर तप करना केवल प्रेम के लिए ही नहीं बल्कि, अपनी आध्यात्मिक शक्ति और आत्म निर्भरता को सिद्ध करने का भी माध्यम है। पार्वती के इस रूप में आत्म सम्मान और साधना की गरिमा का सुंदर समन्वय मिलता है।

वर्तमान समय में आज स्त्री जाति यदि इन महाकाव्य का अध्ययन करती है तब उनमें भी माता पार्वती के समान आत्मनिर्भरता एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार संभव हो सकेगा। महाकवि कालिदास ने रघुवंशम में माता सीता का चित्रण अत्यंत गरिमा में रूप से किया है। माता सीता को एक ऐसी स्त्री जो केवल राम की पत्नी ही नहीं, बल्कि एक आदर्श पत्नी ,मां और नारी शक्ति की मूर्ति बताया है। आज वर्तमान समय में स्त्रियों को माता पार्वती एवं सीता माता के साहस तपस्या त्याग एवं स्वाभिमान का अनुसरण कर अपने जीवन को आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करना होगा। हमारी कवियों ने अपनी ग्रंथ में प्रेम को आध्यात्मिकता से जुड़ा है, किंतु आज वर्तमान समय में आने वाली युवा पीढ़ी, प्रेम को कलंकित करके समाज में होने वाले प्रभावों को दूषित कर रहे हैं एवं वे अपने मार्ग से पथभ्रष्ट हो रहे हैं। आज की पीढ़ी को हमें ऐसे ग्रंथों और महाकाव्य का अध्ययन कराना अति आवश्यक है जिससे उनमें प्रेम व आध्यात्मिक विचारों का प्रादुर्भाव जागृत हो सके। रघुवंश में अग्नि परीक्षा के बाद माता सीता का त्याग फिर से वन में गमन और लव- कुश का पालन- पोषण ये सब आत्म बल और आत्म सम्मान की उच्चतम मिसाल है। कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियों को केवल सौंदर्य और प्रेम की मूर्तियां ही नहीं बल्कि वे आत्म बल ,विवेक और गरिमा की साक्षात प्रतिमाएं है। उनका आत्म सम्मान केवल आंतरिक शक्ति का नहीं, बल्कि सामाजिक मर्यादा ,निर्णय लेने की क्षमता एवं अधिकार की रक्षा का प्रतीक भी है। रघुवंशम महाकाव्य में कवि कालिदास ने नारी की स्वायत्तता को दृष्टिगोचर किया है, जिसमें इंदुमती की स्वयंवर सभा में वह स्वयं वर चुनती है। यह प्राचीन काल में स्त्री को मिले अधिकारों का संकेत करता है, परंतु पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए राजा अजातशत्रु की पत्नी होने के बावजूद भी इंदुमती एक मर्यादित स्त्री का आचरण करती है।

निष्कर्ष

कालिदास की रचनाएं वास्तव में नारी सौंदर्य के साथ मर्यादित प्रेम, आत्म सम्मान आदि की उपासना करती हैं। समग्र दृष्टि की आधार स्वरूप स्त्री को भूलोक के अस्तित्व का मूल मान गया है। स्त्री से संतति ,संतति से समाज और समाज से संसार का निर्माण हुआ है। कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियों की छवि बहुत ही प्रसंसनीय थी, एक तरफ जहां उन्हें घर की ज्योति,

सुखों का आधार बताया है, वहीं दूसरी तरफ उन्हें सती सावित्री भी कहा गया है। कालिदास के काव्य में नारी चेतना के अंतर्गत नारी स्वयं के अस्तित्व को पहचानने, अपनी गरिमा, अधिकार और निर्णय क्षमता को आत्मसात किया है। यह चेतना केवल विद्रोह या स्वतंत्रता की मांग नहीं बल्कि आत्म सम्मान विवेक और आत्मनिर्भरता की अभिव्यक्ति है। कुमार संभवम में लोक कल्याण हेतु कुमार कार्तिकेय के जन्म निमित्त शिव पार्वती के गृहस्थ जीवन का बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है, दूसरी तरफ कवि कालिदास ने रघुवंशम में शूङ्क्षण एवं इंदुमती एवं माता सीता का बहुत ही रमणीय वर्णन प्रस्तुत किया है। कुमारसंभव में माता पार्वती, तपस्विनी पार्वती, विनयवती पार्वती और पार्वती आदि रूपों का अद्भुत वर्णन किया गया है। कुमारसंभव में महाकवि ने माता पार्वती के सौंदर्य से लेकर उनकी असीम तपस्या का वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया है। कालिदास के महाकाव्य में स्त्रियों की छवि बहुत ही आदर्शमयी और उज्जवल है भारतीय इतिहास के पन्ने नारियों की गौरव गाथा से ओतप्रोत है। जैसे- देवासुर संग्राम में कैकई ने अपनी अद्वितीय कौशल से राजा दशरथ को भी चकित कर दिया था। माता सीता का आदर्श त्याग, तपस्या से सभी परिचित हैं। द्रौपदी, शकुंतला, अनसूया, दमयंती, सावित्री आदि जगत प्रसिद्ध स्त्रियों का इतिहास कहीं ना कहीं हमें सोचने को विवश कर देता है। गार्गी, अनसूया, अहिल्या सीता, द्रोपदी रुक्मणी, तारा, मंदोदरी, कुंती, गांधारी आदि न जाने कितनी नारियां हैं, जिस पर भारतवर्ष सदियों से गर्व करता आ रहा है। इनके पावन चरित्र की गाथा से प्रेरणा लेकर आज हम अपने- अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दे सकने की कोशिश कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा प्रो.रामदत्त, संस्कृत महाकाव्य में समाज चित्रण, ऋत प्रेस, नई दिल्ली 2016
2. त्रिपाठी ब्रह्मानंद कालिदास ग्रंथावली चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2016
3. प्रोफेसर त्रिपाठी राधावल्लभ, संस्कृत साहित्य में स्वाधीन स्त्रियां लेख प्रकाशित 2016

4. रघुवंशम व्याख्याकार श्री कृष्ण मणि त्रिपाठी चौखंबा सरभारती प्रकाशन, वाराणसी- संस्करण- 2004 (रघुवंश 16/12)
5. मनुस्मृति 3/56,
6. कुमार संभवम्, कालिदास, साहित्य भंडार मेरठ, 1971

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार